भारत में नगरीकरण

URBANIZATION IN INDIA

- नगरीकरण वह सांस्कृतिक और सामाजिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग भौतिक और अभौतिक (मानवीय / कृत्रिम) संस्कृति को अर्जित करते हैं जिसमें निम्न सम्मिलित है।

- व्यवहार प्रतिमान, संगठन का स्वरूप, नगर में शिथिल विचार
- श्रीनिवास के अनुसार- नगरीकरण से तात्पर्य केवल सीमित क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि से नहीं वरन् सामाजिक आर्थिक संबंधों में परिवर्तन से है|
- किंग्सले डेविस के अनुसार नगरीकरण एक निश्चित प्रक्रिया है,परिवेश का वह चक्र है जिसमें कोई समाज खेतीहर से औद्योगिक समाज में परिवर्तन से है।

संवैधानिक नगर:- वे सभी स्थान, जिसमें नगर पालिका या नगर निगम या नोटिफाइड टाउन एरिया छावनी आदि सम्मिलित हैं।

गणना नगर:- वे सभी स्थान जो निम्नलिखित कसौटियों पर खरे उतरते हैं।

1- जिनकी जनसंख्या कम से कम 5000 हो।

2- जिनकी 75% जनसंख्या कार्यशील पुरुष जनसंख्या गैर कृषि कार्य में लगी हो।

3- जनसंख्या का घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति प्रति वर्ग km. हो।

भारत में नगरों का विकास:- भारत में प्रागैतिहासिक काल से नगर फलते- फूलते रहे हैं इसका ठोस प्रमाण हमें सिंधु घाटी से संबंधित हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो नगरों की खुदाई से मिलता है। भारत में नगरीकरण का दूसरा दौर 600 ईसा पूर्व हुआ,यह सिलसिला 18 वीं शताब्दी में यूरोप वासियों के आने तक थोड़े उतार-चढ़ाव के साथ निरंतर चलता रहा।

इस प्रकार भारतीय नगरों को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है--

(1) प्राचीन नगर. (2) मध्यकालीन नगर (3) आधुनिक नगर।

(1) प्राचीन नगर:-- भारत में लगभग 45 नगर 2000 वर्ष से भी अधिक पुराने हैं |इनमें अधिकांश नगर धार्मिक तथा सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए,जैसे वाराणसी,अयोध्या, प्रयाग(इलाहाबाद),पाटलिपुत्र(पटना), मथुरा, मदुरई आदि|

(2):- मध्यकालीन नगर:- मध्यकालीन में विकसित हुए नगरों में अधिकांशत नगर रियासतों और राज्यों के मुख्यालयों या राजधानियों के रूप में विकसित हुए ,इनमें से अधिकतर दुर्ग नगर है जो पहले से विद्यमान नगरों के खण्डहरों से उभरे हैं।जैसे दिल्ली,हैदराबाद, जयपुर ,लखनऊ ,आगरा ,नागपुर आदि।

(3):- आधुनिक नगर:- इन नगरों का निर्माण अंग्रेजों तथा अन्य यूरोपवासियों ने किया था। उन्होंने सबसे पहले सूरत, दमन ,गोवा ,पांडुचेरी और जैसे कुछ व्यापारिक बंदरगाह का विकास किया ।बाद में अंग्रेजों ने मुंबई, चेन्नई तथा कोलकाता पर अपनी पकड़ मजबूत की उन्होंने शीघ्र ही देश के अन्य भागों में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। इस प्रकार नगरों का विकास तीव्र गति से अनेक क्षेत्रों के रूप में होने लगा, जैसे औद्योगिक, प्रशासनिक, छावनी आदि।

नगरीय जनसंख्या वृद्धि की प्रवृतियां:-भारत में नगरीय जनसंख्या वृद्धि एवं प्रतिशत: -

वर्ष	कुल जनसंख्या मिलियन में	दशकीय वृद्धि (%)	नगरीय जनसंख्या मिलियन में	प्रतिशत अंतर प्रति दशक	कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत
1901	236.30	-	5.7	-	10.01
1911	252.10	5.57	26.6	2.4	10.57
1921	251.40	-0.31	28.6	7.3	11.38
1931	279.00	11.10	33.8	18.4	12.13
1941	318.70	11.22	44.3	31.1	13.91
1951	361.10	13.31	62.6	41.1	17.34
1961	439.20	21.50	78.8	25.9	18
1971	548.20	24.66	108.8	37.8	19.91
1981	683.30	24.43	156.2	46.14	23.34
1991	844.30	23.56	217.2	36.19	25.72
2001	1027.10	21.34	285.5	31.4	27.78
2011	1210.54	17.70	377.1	31.8	31.2

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि 1901 में कुल नगरीय जनसंख्या 257 लाख थी जो बढ़कर 1951 में 626 लाख,व 2011 में बढ़कर 3771 लाख हो गई| इस प्रकार प्रतिशत नगरीय वृद्धि को देखा जाए तो 1901 में कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत10.01था।जो बढ़कर 1951में (17.34) ,2001में (27.78%) व 2011 में 31.16% तक पहुंच गया 2001 में भारत नगरीकरण की प्रारंभिक अवस्था अंतिम स्थान पर थी ,जो 2011 में त्वरण अवस्था में प्रवेश कर चुकी है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अब तक के पिछले110वर्षों में (1901-2011) नगरीय जनसंख्या में वृद्धि की जो प्रवृतियां रही है इसे 4 चरणों में रखा जा सकता है जो निम्न प्रकार है अर्थात् नगरीय वृद्धि की प्रवृत्तियों को निम्न चार युगो/कालो में विभाजित कर स्पष्ट किया जा सकता है।

(1) नगरीय वृद्धि का मंद युग(1901-1931):- के वर्षों के दौरान अकाल एवं भयंकर बीमारियों जैसे प्लेग,इन्फ्लूएंजा के फैलने से जनसंख्या में भारी कमी हो गई। 1918 में ग्रामीण जनसंख्या का कुछ भाग अकाल के कारण नगरों की ओर प्रवासित कर गया, लेकिन उसका प्रभाव बीमारियों के फैलने के कारण सिद्ध न हो सका । 1921 के बाद यद्यपि प्राकृतिक आपदाओं /विपदाओं के प्रभाव से देश मुक्त रहा लेकिन फिर भी नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत अधिक नहीं बढ़ सका और इस प्रकार इस शताब्दी के प्रथम 30 वर्षों में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 10.01 से 12.13 के बीच में ही रहा । नगरीय जनसंख्या में कुल वृद्धि 81 लाख की हुई । नगरों की संख्या में 215 की वृद्धि हुई।

(2) नगरीय वृद्धि का मध्यम युग (1931-61) :-इस समय नगरीय जनसंख्या 45 मिलियन बड़ी है।1931 में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 12.13 था जो बढ़कर 1961 में 18.00% हो गया।

अर्थात् प्रतिशत वृद्धि डेढ़ गुना हुई इस दौरान नगरीय जनसंख्या में वृद्धि लगभग ढाई गुनी हो गई ।इस समय में मध्यम वृद्धि का का कारण प्रारंभिक वर्षों में राजनीतिक अस्थिरता रहा। बाद में स्वतंत्र भारत के समय आर्थिक विकास प्रारंभ में धीमी गति से होता रहा इस समय में नगरों की संख्या में 281 की वृद्धि हुई।

(3) नगरीकरण वृद्धि का तीव्र युग (1961-91)

1961 के बाद नगरीय जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ी इस अवधि में नगरीय जनसंख्या में 1834 लाख की वृद्धि देखी गई और नगरीय जनसंख्या 18% से बढ़कर 25. 72% तक पहुंच गई इस बीच 1279 नए नगरों का जन्म हुआ जो गत वर्षो की तुलना में उल्लेखनीय है इस प्रकार इस अवधि में अन्य युगो की तुलना में अधिक वृद्धि देखी गई।

(4) नगरीकरण वृद्धि का अति तीव्र युग (1991-2011)

इन 20 वर्षों में नगरीय जनसंख्या में 1599 लाख की वृद्धि हुईहै। यह वृद्धि पिछले किसी भी दशक की तुलना में सबसे अधिक है ।इस अवधि में वृद्धि दर 73.62% देखी गई जिससे नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 25 .72 से बढ़कर 31.16% तक पहुंच गया नगरों की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि 4326 की हुई है अतः यह कहा जा सकता है कि अनेक ग्रामीण बस्तियां नगरीकरण की ओर तीव्रता से बढ़ रही है। इसके कारण नगर ,महानगर ,वृहद आकार की ओर बढ़ रहे हैं अर्थात यह कहा जा सकता है कि मिलियन सिटियो (10लाख शहरों)की संख्या में वृद्धि हुई जो 1991 में 23 थी वह 2011 में बढ़कर 53 हो गई है।

(4) नगरीकरण वृद्धि का अति तीव्र युग (1991-2011)

इन 20 वर्षों में नगरीय जनसंख्या में 1599 लाख की वृद्धि हुईहै। यह वृद्धि पिछले किसी भी दशक की तुलना में सबसे अधिक है ।इस अवधि में वृद्धि दर 73.62% देखी गई जिससे नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 25 .72 से बढ़कर 31.16% तक पहुंच गया नगरों की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि 4326 की हुई है अतः यह कहा जा सकता है कि अनेक ग्रामीण बस्तियां नगरीकरण की ओर तीव्रता से बढ़ रही है।

इसके कारण नगर ,महानगर ,वृहद आकार की ओर बढ़ रहे हैं अर्थात यह कहा जा सकता है कि मिलियन सिटियो (10 लाख शहरों)की संख्या में वृद्धि हुई जो 1991 में 23 थी वह 2011 में बढ़कर 53 हो गई है।

इस अवधि में नगरीय जनसंख्या में उच्च वृद्धि के लिए निम्न कारणों/ परिस्थितियों को उत्तरदाई माना जा सकता है-

(1) देश में भारी संख्या में उद्योगों एवं व्यापारिक संस्थान की स्थापना।

(2) लोगों ,विशेषकर ग्रामीण लोगों का नगरों की ओर आकर्षित होना।

(3) अनेक ग्रामीण बस्तियों का नगरीय बस्ती का पद प्राप्त करना।

(4) नए-नए नगरों का विकास एवं विस्तार होना।

(5) वर्तमान नगरों द्वारा अपने आकार में भारी वृद्धि करना विशेष रुप से बृहद महानगरों द्वारा।

(6) नगरीय सभ्यता की पहचान विकसित अर्थव्यवस्था के रूप में होना।

(7) ग्रामीण जीवन की अपेक्षा में नगरीय जीवन में गतिशीलता का बढ़ना।

- संयुक्त राष्ट्र के एक अनुमान के आधार पर भारत की नगरीय जनसंख्या 2021 में 5300 लाख तथा 2030 में 5750 लाख तक पहुंच जाएगी, 2030 तक देश की 41% जनसंख्या नगरों में रह रही होगी।

नगरीकरण वृद्धि की अवस्थाएं (1901 -2011)

क्र.स.	वृद्धि अवस्था	अवधि	नगरीय जनसंख्या में वृद्धि (लाख)	वृद्धि दर	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	बड़े हुए नगरों की संख्या
1	मंद	1901-31	81	31.51	10.01-12.13	215
2	मध्यम	1931-61	450	133.14	12.13-18.00	281
3	तीव्र	1961-91	1834	175.63	18.00-25.72	1279
4	अति तीव्र	1991-2011	1599	73.62	25.72-31.16	4326
	कुल परिवर्तन	1901-2011	3514	-	21.15	6101

भारत में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि (1901-2011)

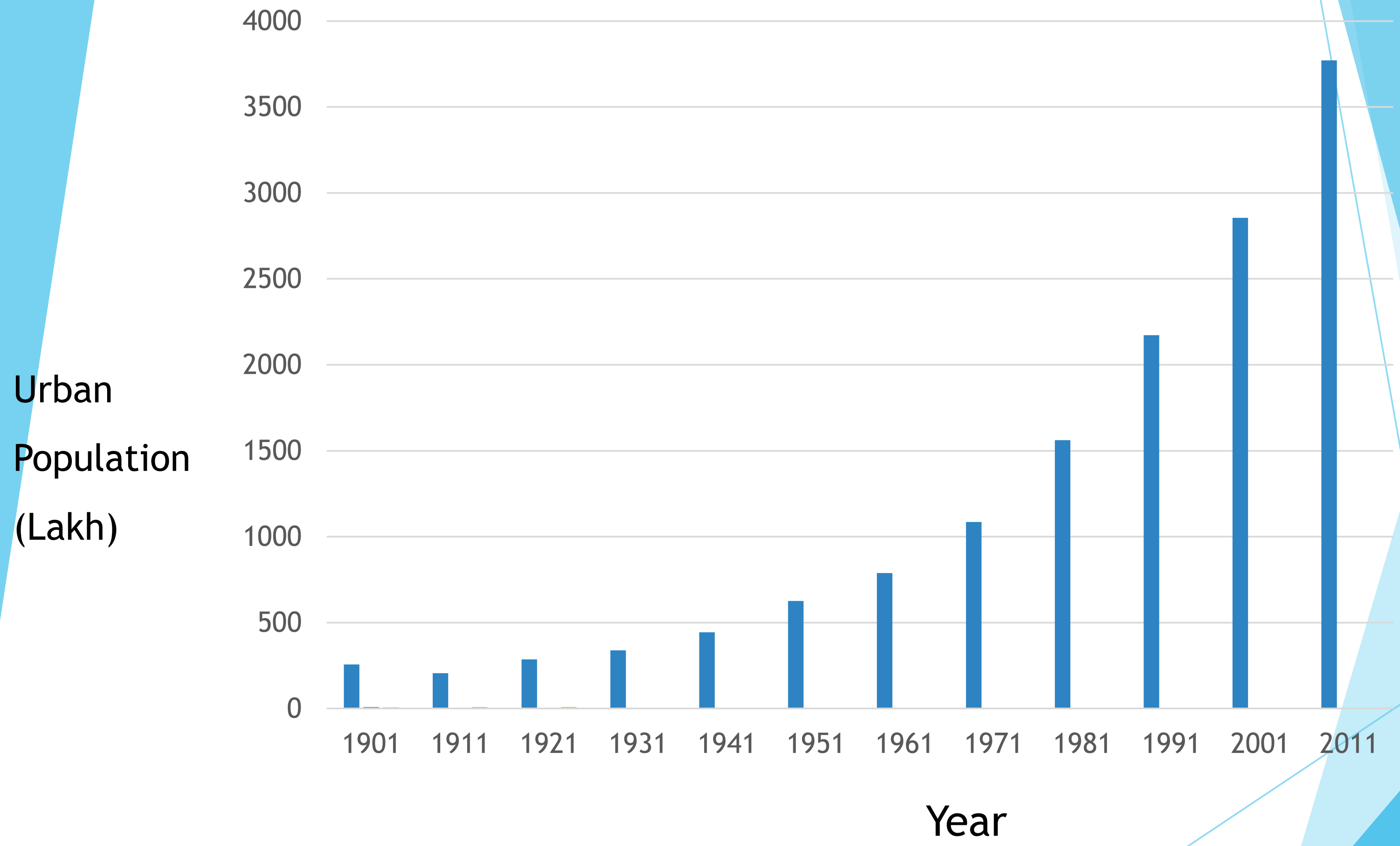

भारत में नगरीकरण का प्रादेशिक / क्षेत्रीय /राज्य प्रतिरूप:-

देश के विशाल आकार ,भौगोलिक विविधता तथा सामाजिक, आर्थिक विभिन्नता के परिणाम स्वरूप भारत के विभिन्न भागों में नगरीकरण के स्तर में अत्यधिक विषमता पाई जाती है जहां एक और दिल्ली और चंडीगढ़ के केंद्र शासित प्रदेशों में 97% से अधिक जनसंख्या नगरीय है वहीं दूसरी ओर हिमाचल प्रदेश में लगभग 10% जनसंख्या के नगरों में रहती है।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का 31.16 % भाग नगरीय क्षेत्र में निवास करता है अतः प्रदेश विशेष की असमानता के कारण नगरीय क्षेत्र के आधार पर भारत को निम्नलिखित भागों (क्षेत्रों)श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है--

(1) अति नगरीकृत प्रदेश (उच्च नगरी करण क्षेत्र) :- 75%या उससे अधिक

(2) मध्यम नगरी क्षेत्र /श्रेणी :- 50 -75% वाले क्षेत्र

(3) निम्न नगरीकृत क्षेत्र :- 25 - 50% वाले क्षेत्र

(4) अति निम्न नगरीकृत क्षेत्र :-25% से कम नगरीकृत वाले क्षेत्र

(1) उच्च नगरीकृत प्रदेश:- इस श्रेणी में भारत के उन राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को सम्मिलित किया गया है,जिनका नगरीय जनसंख्या अनुपात 75% या इससे अधिक है जैसे दिल्ली (97.5),चंडीगढ़ (97.3),लक्ष्य द्वीप (78.1) और दमन एवं दीप (75.2) आदि है।

(2) मध्यम नगरीकृत प्रदेश:- इस वर्ग के अंतर्गत पांडुचेरी(68.3), गोवा (62.2) मिजोरम(52.1) आदि सम्मिलित है इसमें पुडुचेरी अत्यंत लघु क्षेत्रफल केंद्र शासित प्रदेश है गोवा (सबसे छोटा प्रदेश) भी लघु राज्य है पांडुचेरी और गोवा में नगरीकरण का स्तर 60% से ऊपर है।

(3) निम्न नगरीकृत प्रदेश :- 25 से 50% नगरीकृत वाले क्षेत्र अधिकांश राज्य इसी श्रेणी के अंतर्गत शामिल है लगभग 16 राज्यों तथा 2 केंद्र शासित प्रदेशों (दादरा एवं नगर हवेली और अंडमान दीप समूह)में नगरीकरण का स्तर 25 से 50% के बीच पाया जाता है, दक्षिण भारत के अधिकांश राज्य इसी श्रेणी के अंतर्गत आते हैं जैसे तमिल नाडु (48.4)इस श्रेणी में सबसे ऊपर है इसके बाद केरल(47.7),दादर एवं नगर हवेली (46.7),महाराष्ट्र(45.2) ,गुजरात(42.6),कर्नाटक (38.7), आंध्र प्रदेश (33.4), पंजाब (38.7), हरियाणा (34.9), उत्तराखंड (30.2), पश्चिमी बंगाल (31.9), जम्मू एवं कश्मीर , अंडमान निकोबार दीप समूह(37.7), मध्य प्रदेश (27.6), मणिपुर (32.5) ,नागालैंड (28.7),त्रिपुरा (26.2),सिक्किम (25.2) आदि शामिल हैं।

INDIA: PERCENTAGE SHARE OF TOTAL POPULATION, 2011 (URBAN)

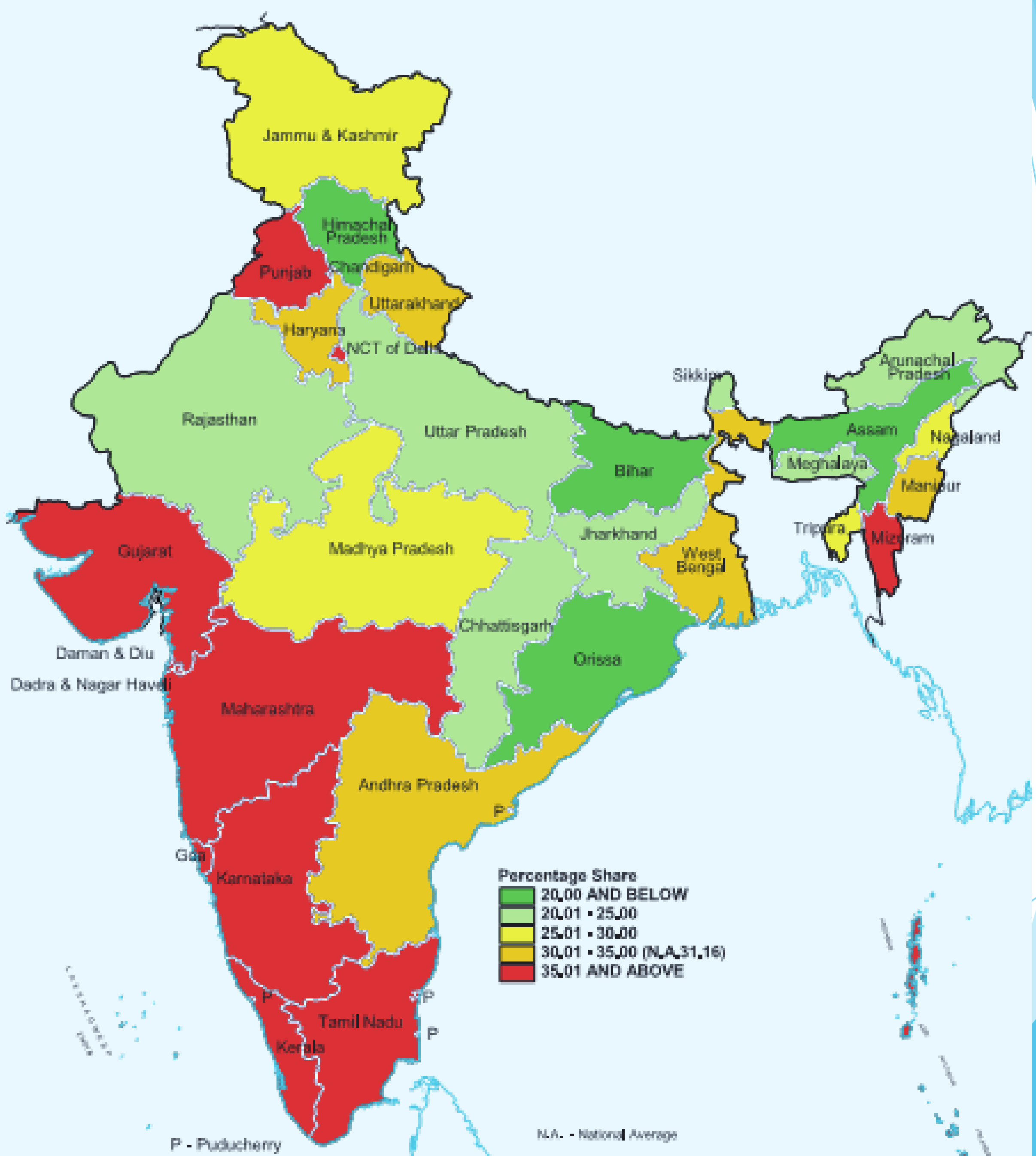

(4) अति निम्न नगरीकृत (प्रदेश 25% से कम) :-

इस श्रेणी के अंतर्गत देश के लगभग 10 राज्य सम्मिलित हैं,जहां 25% से कम जनसंख्या नगरों में रहती है हिमाचल प्रदेश में सबसे कम (10.00%) नगरीय अनुपात है। अर्थात यहां की 10% जनसंख्या ही नगरों में निवास करती है ,अन्य राज्यों में बिहार (11.3), ओडिशा (16.7), असम (14.1),मेघालय (20.1),उत्तर प्रदेश (22.3), अरुणाचल प्रदेश (22.9) ,छत्तीसगढ़ (23.2) ,झारखंड (24.0),और राजस्थान (24.9) आदि शामिल हैं।

भारत में महानगरीय शहरों का विकास:-

भारत में नगरों के विकास का समय वर्तमान काल 18 50 से प्रारंभ होता है , अग्रेजों ने चेन्नई और कोलकाता में अपने कार्यालय बनाएं। कोलकाता को राजधानी बनाया गया और मुंबई का विकास विदेशों से माल आयात के कारण होने लगा।तब से भारत में नई जागृति पैदा हुई। उद्योगों व व्यापार केंद्रों आदि स्थापित किए जाने लगे। 1854 में भारत में पहली सूती कपड़ा उद्योग की मिल स्थापित की गई, इसके बाद देश में उद्योग व्यापार और परिवहन आदि का विकास देश के विभिन्न क्षेत्रों में होता रहा है।1853 में ही देश में प्रथम रेल मार्ग बनाया गया था।अंग्रेजों ने पहले अपने निवास स्थान समुद्री तट पर स्थित सूरत,चेन्नई, मुंबई ,कोलकाता आदि नगरों में बनाए थे।ब्रिटेन तथा यूरोपीय देशों में व्यापार होने के कारण मुंबई,कोलकाता, चेन्नई आदि समुद्री बंदरगाह का विकास तेजी से होने लगा।

1907 में जमशेदपुर(झारखंड) में लोहा इस्पात का कारखाना स्थापित किया गया। कुल्टी,बर्नपुर,भद्रावती आदि लोहा इस्पात कारखानें स्थापित किये! मुंबई, सोलापुर, अहमदाबाद, सूरत, भडौच ,इंदौर ,नागपुर ,आदि में सूती वस्त्र उद्योग, बंगाल हुगली नदी घाटी में जूट उद्योग तथा जुट का बना सामान ब्रिटेन ,फ्रांस, जर्मनी आदि देशों को निर्यात किया जाने लगा ।चाय,चीनी, सीमेंट, कागज ,ऊन ,चमडा ,खाद इत्यादि के कारखाने स्थापित होने से अनेक नगरों की स्थापना को बल मिला। 1911 में नई दिल्ली को बसाने व राजधानी बनाने का कार्यक्रम बनाया गया। और तब से उत्तर भारत का यह प्राचीन नगर उन्नति करने लगा प्रांतों की राजधानियों में भी सरकारी कार्यालय ,पुलिस, शिक्षा केंद्र, डाकघर ,बाजार आदि स्थापित हो गए जिससे नगरों में भारी वृद्धि होने लगी।

ब्रिटिश सरकार भारत में स्थाई रूप से अपना राज्य जमाना चाहती थी। उसने सेना के लिए बहुत सी छावनियों के लिए नगरों का निर्माण तथा आगरा,दिल्ली, मेरठ, अंबाला ,नसीराबाद आदि नगरों के समीप छावनी नगर स्थापित किए।

विभिन्न प्रांतों में ग्रीष्मकालीन राजधानीयों के लिए पर्वतीय बस्तियों को जैसे मंसूरी, शिमला ,नैनीताल ,दार्जिलिंग, शिलांग ,पंचमढ़ी, आबू आदि को नगर के रूप में विकसित किया गया। मैदानी भागों में परिवहन साधनों का तेजी से विकास किया गया, जिससे नए नगरों की स्थापना को प्रोत्साहन मिला।

प्रथम विश्व युद्ध (1914 से 1919) और द्वितीय विश्व युद्ध (1939 से 1945) के कारण भारतीय उद्योगों को प्रोत्साहन मिला और नगरों की संख्या व आकार में वृद्धि हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत में नगरों के वृद्धि कुछ तेजी के साथ हुई ।नदी घाटी योजना के अंतर्गत नदियों पर बांध बनाकर जल विद्युत उत्पादन, कोयला और तेल आदि के अधिक उत्पादन से उद्योगों को बढ़ावा मिला सिंदूरी(बिहार) राउरकेला आदि नगरों में खाद के कारखाने स्थापित किए गये। भिलाई, दुर्गापुर ,बोकारो आदि नगरों की स्थापना लोहा ,इस्पात ,कारखानों के फलस्वरुप हुई। बरौनी (mp/ Up)मून घाटी,अंकलेश्वर(गुजरात) आदि नगरों का विकास तेल शोधन कार्यों के कारण हो रहा है।तारापुर, नरोरा ,(up) कलपक्कम (तमिल नाडु) ,काकरापार(कर्नाटक), रावतभाटा में अणुशक्ति विद्युत घर स्थापित किया गया, गाजियाबाद, इटानगर, नोएडा ,चंडीगढ़ ,गांधीनगर आदि प्रशासनिक दृष्टि से स्थापित किये गये।

आकारीय वर्ग के अनुसार नगरीय विकास नगर

भारत में जनसंख्या के आधार पर नगरों को कई वर्गों में बांटा गया है जो निम्न प्रकार है

आकार	वर्ग	जनसंख्या
1	First	100,000 above
2	Second	50,000-99,999
3	Third	20,000-49,999
4	Fourth	10,000-19,999
5	Fifth	5,000-9,999
6	Sixth	Less then 5000

भारत में नगरों की संख्या में वृद्धि एवं उनके आकार संबंधित परिवर्तन (नगरों की संख्या में परिवर्तन 1901-2011)

वर्ष	नगरों की संख्या	दशकीय वृद्धि
1901	1834	-
1911	1776	-58
1921	1920	144
1931	2049	129
1941	2210	161
1951	2849	639
1961	2330	-519
1971	2531	201
1981	3245	714
1991	3609	364
2001	5161	1552
2011	7935	2774

भारत में आकारीय वर्गानूसार (श्रेणीनूसार) नगरों की संख्या (1901 से 2011)

	नगरीय श्रेणी						
Year	1	2	3	4	5	6	Total
1901	24	42	135	393	750	490	1834
1911	23	39	142	364	713	495	1776
1921	28	45	153	370	741	983	1920
1931	33	54	193	439	806	524	2049
1941	47	77	246	505	931	404	2210
1951	74	95	330	621	1146	578	2849
1961	102	129	449	732	739	179	2330
1971	145	178	570	847	641	150	2531
1981	216	270	739	1048	742	230	3245
1991	296	341	927	1135	725	185	3609
2001	394	547	1384	1553	1056	227	5161
2011	468	-	-	7467	-	-	7935
1901 - 2011	374	505	1249	1160	306	-263	6101

- नोट:- इन 110 वर्षों में नगरों की सभी श्रेणियों के आधार पर(1901-2011) दशकों तक कुल 6101 नगरों की संख्या बढ़ी।

- 2011 के अनुसार में देश की कुल नगरीय जनसंख्या का 70.24% प्रथम श्रेणी के नगरों में(468) तथा शेष 30% नगरीय जनसंख्या 7467 नगरों में जो 2-6 वर्ग के हैं, में वितरित मिलती है।

नगरों की संख्या का उनके वर्ग में जनसंख्या के अनुसार वितरण (distribution of population among town according to the their category):-देश में पिछले 110 वर्षों में प्रथम वर्ग के नगरों ने अपनी जनसंख्या में भारी वृद्धि अंकित की है।द्वितीय व तृतीय वर्ग के नगरों में रहने वाली जनसंख्या का प्रतिशत स्थिर रहा है जबकि शेष तीनों वर्गों(4,5,6) में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत घटा है, विशेष रूप से छठे वर्ग के नगरों का अस्तित्व सिमट रहा है।

1. प्रथम वर्ग के नगर:- इस वर्ग में 1लाख या उससे अधिक जनसंख्या वाले नगरों को शामिल किया जाता है। 1901में 24 नगरों में कुल नगरीय जनसंख्या का22.93% भाग निवास करता था। जो 1951 में इसकी संख्या बढ़कर 74 तथा 42 % हो गई।इसी प्रकार 2011 में इस श्रेणी की संख्या बढ़कर 468 हो गई जो कुल नगरीय जनसंख्या का 70.24 % भाग लिये हुए है। जबकि 2001 में इस वर्ग के नगरों की संख्या 394 व62.20% नगरीय जनसंख्या इस वर्ग की थी।

इस प्रकार 2011 में नगरों की संख्या में 74 की वृद्धि हुई है और कुल नगरीय जनसंख्या में इनका प्रतिशत बढ़कर 70.24 हो गया।

स्पष्ट है कि देश में नगरीय जनसंख्या का संकेंद्रण होता जा रहा है, शेष 30%(29.76%)(7467 नगरों में) नगरीय जनसंख्या 7467 नगरों में, जो द्वितीय वर्ग से षष्टम वर्ग के हैं, में वितरित मिलती है। इसके विपरीत विश्व की 47% नगरीय जनसंख्या बड़े आकार के नगरों में निवास करती है।

महानगरीकरण

देश के वृहत् नगर और वृहदाकार होते जा रहे हैं और वे महानगर बनने की प्रक्रिया में हैं। एक जनगणना वर्ष से दूसरे जनगणना वर्ष मे महानगरों की संख्या तीव्रता से बढ़ती जा रही है,इस प्रकार कुल नगरीय जनसंख्या में महानगरों या बड़े नगरों का हिस्सा तेजी से बढ़ रहा है।

देश में मिलियन सिटी एवं नगरीय समूह की जनसंख्या (1901-2011):-

Year	Milion cities Number	Population in Milion	Per.of Total urban population	Decennial growth rate
1901	1	1.51	5.84	-
1911	2	2.76	10.65	83.02
1921	2	3.13	11.14	13.24
1931	2	3.41	10.18	8.86
1941	2	5.31	12.02	55.79
1951	5	11.75	18.81	121.32
1961	7	18.10	22.93	54.10
1971	9	27.83	25.51	53.75
1981	12	42.12	26.41	51.35
1991	23	70.66	32.54	67.76
2001	35	107.88	37.80	52.67
2011	53	160.70	42.61	48.96

भारत में 10 लाखी नगर(मिलियनसिटी),2011

No.	Town/urban (नगर)	Population जनसंख्या	No.	Town/urban (नगर)	Population जनसंख्या
1	मुंबई	18414	10	जयपुर	3073
2	दिल्ली	16314	11	कानपुर	2920
3	कोलकाता	14112	12	लखनऊ	2901
4	चेन्नई	8690	13	नागपुर	24 98
5	बेंगलुरु	8499	14	गाजियाबाद	2358
6	हैदराबाद	7749	15	इंदौर	2167
7	अहमदाबाद	6352	16	कोयंबटूर	2151
8	पुणे	5050	17	कोच्चि	21 18
9	सूरत	4585	18	पटना	2047

No.	Town/urban	Population	No.	Town/urban	Population
	(नगर)	जनसंख्या		(नगर)	जनसंख्या
19	कोझीकोड	20 31	28	लुधियाना	16 14
20	भोपाल	1883	29	नासिक	156 3
21	थ्रिसूर	18 55	30	विजयवाड़ा	1491
22	वडोदरा	1817	31	मदुरई	1462
23	आगरा	1746	32	वाराणसी	1435
24	विशाखापट्टनम	1730	33	मेरठ	1424
25	मल्लापुरम	1699	34	फरीदाबाद	1405
26	तिरुअनंतपुरम	1687	35	राजकोट	1390
27	कन्नूर	1643	36	जमशेदपुर	1370

No.	Town/urban	Population	No.	Town/urban	Population
	(नगर)	जनसंख्या		(नगर)	जनसंख्या
37	श्रीनगर	1273	46	रांची	1127
38	जबलपुर	1267	47	रायपुर	1122
39	आसन सोल	1243	48	कोल्लम	1110
40	वसाई विराट	1221	49	ग्वालियर	1102
41	इलाहाबाद	1217	50	दुर्ग भिलाई	1064
42	धनबाद	1295	51	चंडीगढ़	1026
43	औरंगाबाद	1189	52	तिरुचिरापल्ली	1022
44	अमृतसर	1184	53	कोटा	1001
45	जोधपुर	1138			

2011 की जनगणना के अनुसार 1लाख या उससे अधिक जनसंख्या रखने वाले नगरीय समूहों एवं महानगरों की संख्या बढ़कर 53 तक पहुंच गई, जो 1901 में मात्र 1(कोलकाता) थी, एवं 1951 में यह 5 थी(कोलकाता, मुंबई, दिल्ली, चेन्नई और हैदराबाद) इसी प्रकार गत दशक(2001) में 18 नगरों ने महानगर का पद प्राप्त कर लिया है, अर्थात् 2001 में यह संख्या 35 थी।

इस प्रकार देखा जाए तो इन 53 महानगरों की जनसंख्या 1607 लाख है (16.07 करोड़) जो देश की कुल नगरीय जनसंख्या का 42.61%है। इनमें से छः महानगर के रूप में है। तथा शेष 47 महानगर नगरीय समूह के रूप में अपनी उपस्थिति रखते हैं।

10 लाखी नगरों में जो नगर 100लाख से अधिक जनसंख्या रखते हैं ,उनको मेगा नगर(वृहद् महानगर) कहा जाता है। यह मेगा महानगर जनसंख्या की दृष्टि से इस प्रकार हैं-ग्रेटर मुंबई नगरीय समूह (184लाख), दिल्ली नगरीय समूह (163लाख) एवं कोलकाता नगरीय समूह (141लाख)।

2011 में दिल्ली ने कोलकाता को पछाड़कर दूसरा स्थान प्राप्त कर लिया है।इन मेगा नगरों की जनसंख्या वृद्धि दर में 2001-11 के दशक में कमी देखने में आई है। ग्रेटर मुंबई की जनसंख्या वृद्धि दर 1991-2001 दशक में 90.47% थी जो घटकर 2001-11 के दशक में 12.05% अंकित की गई है।

इसी प्रकार दिल्ली नगरीय समूह में 2001 में 52.24% से घटकर26.69%व कोलकाता नगरीय समूह की जनसंख्या वृद्धि दर19.60% से घटकर 2001-11 में 6.87% रह गई है।

50 लाख से 100 लाख के बीच जनसंख्या रखने वाले महानगरों की संख्या 5 है। इनमें चेन्नई (86.96 लाख), बेंगलुरु (84.99लाख), हैदराबाद (77. 49 लाख), अहमदाबाद (63. 52 लाख), पुणे (50. 50 लाख) शामिल है।

-30 लाख से 50 लाख के बीच जनसंख्या रखने वाले महानगरों की संख्या 2 है। सूरत (45. 85 लाख), जयपुर (30.73 लाख)।

-20 से 30 लाख के बीच जनसंख्या रखने वाले 9 नगर(महानगर) इस प्रकार हैं-कानपुर (29.20), लखनऊ (29.01), नागपुर (24.98), गाजियाबाद (23.58), इंदौर (21.18), पटना (20.46),कोजीखोड(20.30 लाख)।

10 लाख से 20 लाख के बीच जनसंख्या रखने वाले महानगरों की संख्या 34 है इन्हें दो श्रेणियों में रखा गया है-

1. प्रथम वर्ग:-इनमें भी महानगर शामिल है जो 2001 में भी महानगर का पद रखते थे-भोपाल(18.83), बड़ोदरा(18.17), आगरा(17.46),लुधियाना(16.14),नासिक(15.63),विजयवाड़ा (14.91),मदुरई14.62),वाराणसी(14.35),मेरठ(14.24),

फरीदाबाद(14.24),राजकोट(13.90),जमशेदपुर(13.37),जब लपुर(12.67),आसनसोल(12.43),इलाहाबाद(12.17), धनबाद(11.95), अमृतसर(11.84लाख)।

2. द्वितीय वर्ग:-इसमें वे महानगर शामिल हैं, जिन्होंने 2011 में प्रथम बार महानगर की श्रेणी में स्थान प्राप्त किया है जो इस प्रकार हैं इनकी संख्या 17 है- थिरूससूर (18.54लाख), विशाखापट्टनम (17.30), मालापपुरम (16.99), तिरुवनंतपुरम (16.87), कन्नूर (16.42), श्रीनगर (12.73), बसई-विरार (महाराष्ट्र (12.21), औरंगाबाद (11.83) जोधपुर (11.38), रांची (11.26), रायपुर (11.23), कोल्लम (केरल (11.10), ग्वालियर (11.02), दुर्ग भिलाई नगर (10.64), चंडीगढ़ (10.26), तिरुचिरापल्ली (10.21) एवं कोटा (10.01) लाख।

क्रमांक संख्या	जनसंख्या श्रेणी	महानगरों की संख्या
1.	**100 लाख से अधिक**	3
2.	50 लाख से 100 लाख तक	**5**
3.	30 लाख से 50 लाख तक	**2**
4.	20लाख से 30 लाख तक	**9**
5.	10 लाख से 20लाख तक	**34**
	Total	**53**

महानगरीय क्षेत्र:- यह विशाल जनसंख्या केंद्र और उसके पड़ोसी क्षेत्र को मिलाकर होता है। इसमें एकदम निकटतम से जुड़े शहर एवं अन्य प्रभावित क्षेत्र भी गिने जाते हैं ,इसमें इसके बड़े शहर के नाम से ही उस क्षेत्र के नाम को जाना जाता है।